खगड़िया जिला : जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व प्रतिरूप

विमल चन्द्र राय[1] एवं प्रो0 (डॉ0) बी0के0 शर्मा[2]

[1]शोधार्थी

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

[2]पूर्व संकायाध्यक्ष (सामाजिक विज्ञान)

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

भूमिका

बिहार का खगड़िया ही एक ऐसा जिला है जो 7 नदियों से घिरा हुआ है। यह मक्का उत्पादन में बिहार का सबसे अग्रणी जिला माना जाता हैं। पर्यटन स्थल के रूप में परबत्ता प्रखण्ड के भरतखण्ड गाँव में गंगा नदी के किनारे स्थित 53 कोठरी 56 द्वार एक प्राचीन आलीशान मकान है। जिसे स्थानीय लोग भूल–भूलैया के नाम से भी पुकारते हैं। इसके अतिरिक्त फरकिया क्षेत्र में स्थित माँ कात्यायनी मंदिर भी पर्यटन स्थल के रूप में अति प्रसिद्ध है, जो खास कर पशुपालकों का तीर्थ स्थल है। फरकिया शब्द ऊर्दू भाषा के फरक शब्द से बना है जिसका अर्थ अलग होता है। ऐसा कहा जाता है कि मुगल बादशाह अकबर के शासनकाल में जब राजा टोडरमल के द्वारा पूरे क्षेत्र की मापी कराई जा रही थी तो घने जंगलों, नदियों आदि से घिरे होने के कारण इस क्षेत्र की मापी नहीं हो पाई जिस कारण इस दुर्गम और बीहड़ क्षेत्र को 'फरक' (अलग) कर दिया गया। जो वर्तमान में फरकिया के नाम से जाना जाता है।

खगड़िया जिला का भौगोलिक विस्तार $24^0 43'$ उत्तर से $25^0 45'$ उत्तरी अक्षांश तथा $86^0 20'$ से $86^0 50'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।[1] यह जिला ज्यामितीय आकृति की दृष्टि से लगभग समानान्तर चतुर्भुजाकार हैं। इसका कुल क्षेत्रफल 1486 वर्ग किलोमीटर है।[2] जो बिहार के कुल क्षेत्रफल का 2.03 प्रतिशत है। समुद्र तल से जिले की औसत ऊँचाई 53 मीटर है।[3]

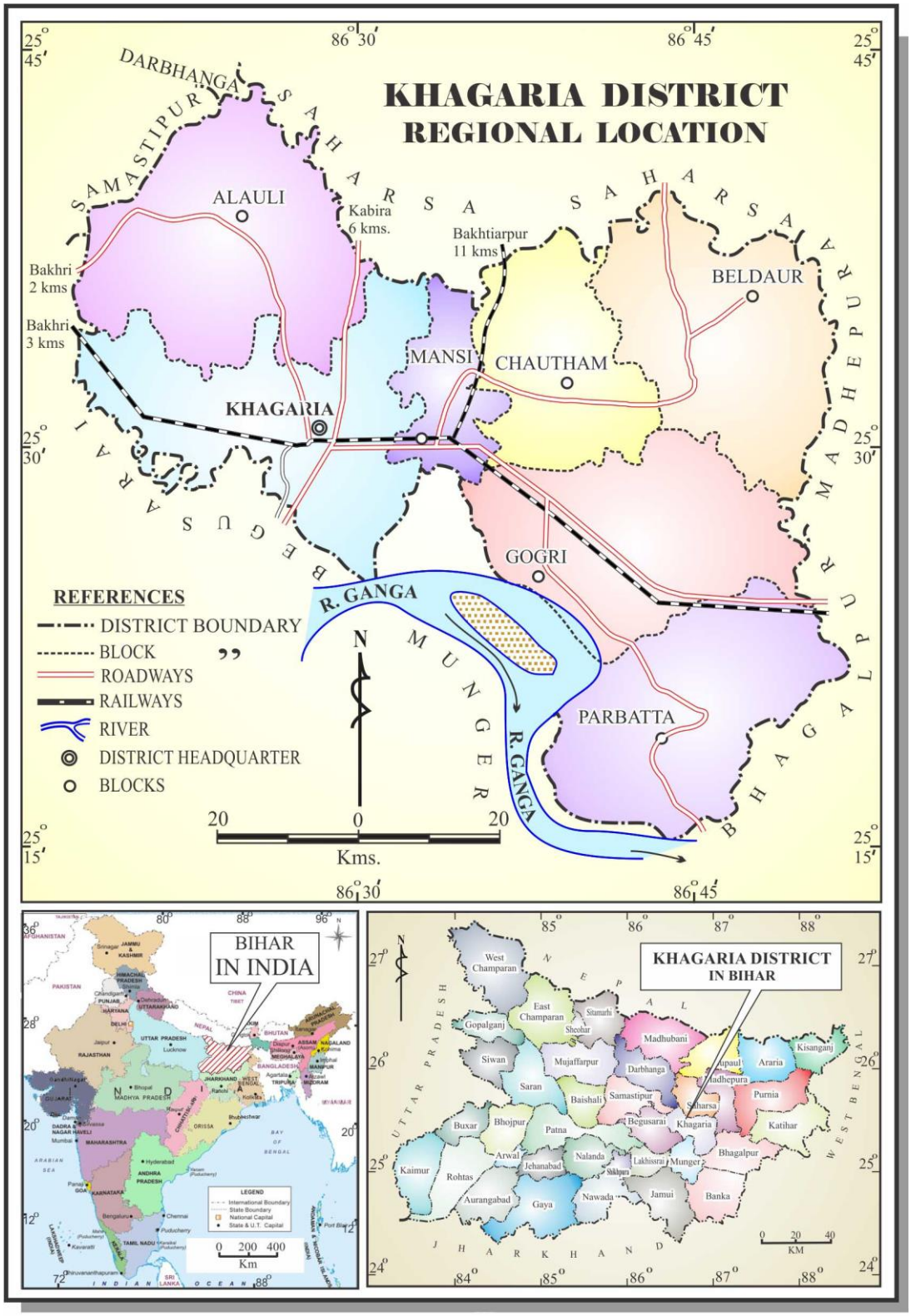

चित्र सं0 : 1.1

जनसंख्या

किसी देश में रहने वाले लोगों की कुल संख्या ही उसकी जनसंख्या कहलाती है, जो देश की जनशक्ति का परिचायक होती है। किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मानव है।[4] मनुष्य पृथ्वी के धरातलीय स्वरूप को परिवर्तित करता है तथा अपने परिश्रम, तकनीक, एवं बुद्धि के उपयोग से संसाधनों का उपभोग भी करता है। इस दृष्टिकोण से मानव एक महत्वपूर्ण भौगोलिक कारक है। साथ ही संसाधनों को गतिशीलता प्रदान करने के कारण उत्पादन का सबसे सक्षम

कारक भी है। किसी क्षेत्र के अनुसार तर्क पूर्ण और समुचित वैज्ञानिक अध्ययन तथा विश्लेषण हेतु इस तथ्य को ज्ञात करना आवश्यक है कि उस क्षेत्र में समय विशेष में कितनी जनसंख्या रही है, उसके लिये कितना स्थान संसाधन उपलब्ध रहा है, एवं वहाँ विकास की प्रवृति कैसी रही है? इसकी शैक्षणिक, व्यावसायिक, कार्यिक, आनुवंशिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आमोद–प्रमोद की विशेषताएँ कैसी रही है, उसके बीच सामाजिक सम्बन्ध किस प्रकार के है और किस प्रकार क्षेत्र विशेष की जनसंख्या समय एवं स्थान के बदलते परिवेश में अपने जैविक एवं सामाजिक आवश्यकताओं तथा दायित्वों की पूर्ति कर रही है।[5]

जिला खगड़िया का कुल आबादी जनगणना 2011 के अनुसार, 1,666,886 व्यक्ति है, जिसमें पुरूष जनसंख्या 883,786 तथा महिला जनसंख्या 783,100, जनसंख्या घनत्व 1122 तथा लिंगानुपात 886 है। खगड़िया जिला की औसत साक्षरता 57.92 है, जिसमें पुरूष साक्षरता 65.25 तथा महिला साक्षरता 49.56 प्रतिशत है। कुल क्षेत्रफल 1486 वर्ग कि0मी0 पर विस्तृत सम्पूर्ण जिले की जनसंख्या एवं भूमि की समस्याओं का गहन अध्ययन सहज नहीं है, किन्तु अंचल स्तर पर सम्पूर्ण जिले का जनसांख्यिकीय एवं भू–सर्वेक्षण हुआ है।

जनसंख्या वितरण

खगड़िया में जनसंख्या वितरण असमान है। मानव जाति की यह प्रवृति होती है कि जहाँ जीविकोपार्जन के साधन अधिक उपलबध होते हैं, वहीं मनुष्य संकेन्द्रित होते हैं। बंजर भूमि और विषम धरातलीय स्वरूप वाले क्षेत्रों में कम जनसंख्या का जमाव पाया जाता है। सामान्यता जिला के मध्यवर्ती भाग में समतल भूमि उपजाऊ मिट्टी, सिंचाई तथा यातायात की सुविधा के कारण अधिक जनसंख्या पायी जाती है। इसके विपरीत जिला के उत्तरी एवं दक्षिणी क्षेत्र में असमतल धरातल, यातायात के संसाधनों का कम विकास, स्वास्थ्य एवं उच्च शिक्षा का अभाव के कारण कम जनसंख्या मिलती है।

2011 जनगणना के अनुसार खगड़िया जिला की 94.77 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है तथा 5.23 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में विकास करती हैं। कृषि में सापेक्षिक स्थिरता, जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, नगरों में नौकरी करने की इच्छा, नगरों में उपलब्ध सुविधाओं का आकर्षण जैसे भौगोलिक कारक ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर निरन्तर जनसंख्या का स्थानान्तरण करते हैं। खगड़िया जिला में औद्योगिक क्षेत्र का अभाव हैं। बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में जनसंख्या कम पायी जाती है।

खगड़िया जिला का सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रखंड है। जिसके अन्तर्गत जिला की 22.88 प्रतिशत जनसंख्या पायी जाती है। दूसरा और तीसरा स्थान क्रमशः गोगरी 19 प्रतिशत तथा अलौली 16.93 % जनसंख्या रहती है। सबसे कम जनसंख्या 5.30 मानसी प्रतिशत प्रखंड में पायी जाती है। बाढ़ ग्रसित क्षेत्र होने के कारण यह क्षेत्रफल में भी सबसे छोटा है। खगड़िया में जनसंख्या के वितरण का अध्ययन इसके विभिन्न प्रखण्डों में जनसंख्या एवं क्षेत्रफल के आधार पर क्रमबद्व करके किया जा सकता है।

तालिका 1.1

खगड़िया में प्रखंडवार जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व, (2011)

क्र0 सं0	प्रखंड	क्षेत्रफल	जनसंख्या	जनसंख्या घनत्व
1.	अलौली	274.44	282127	1028
2.	खगड़िया	262.28	381358	1454
3.	मानसी	68.03	88511	1301
4.	चौथम	165.94	153831	927
5.	बेलदौर	223.46	200223	896
6.	गोगरी	250.21	316770	1266
7.	परबत्ता	240.93	244066	1013
8.	कुल	1494.97	**1666886**	**1115**

स्रोत : भारतीय जनगणना रिपोर्ट, 2011

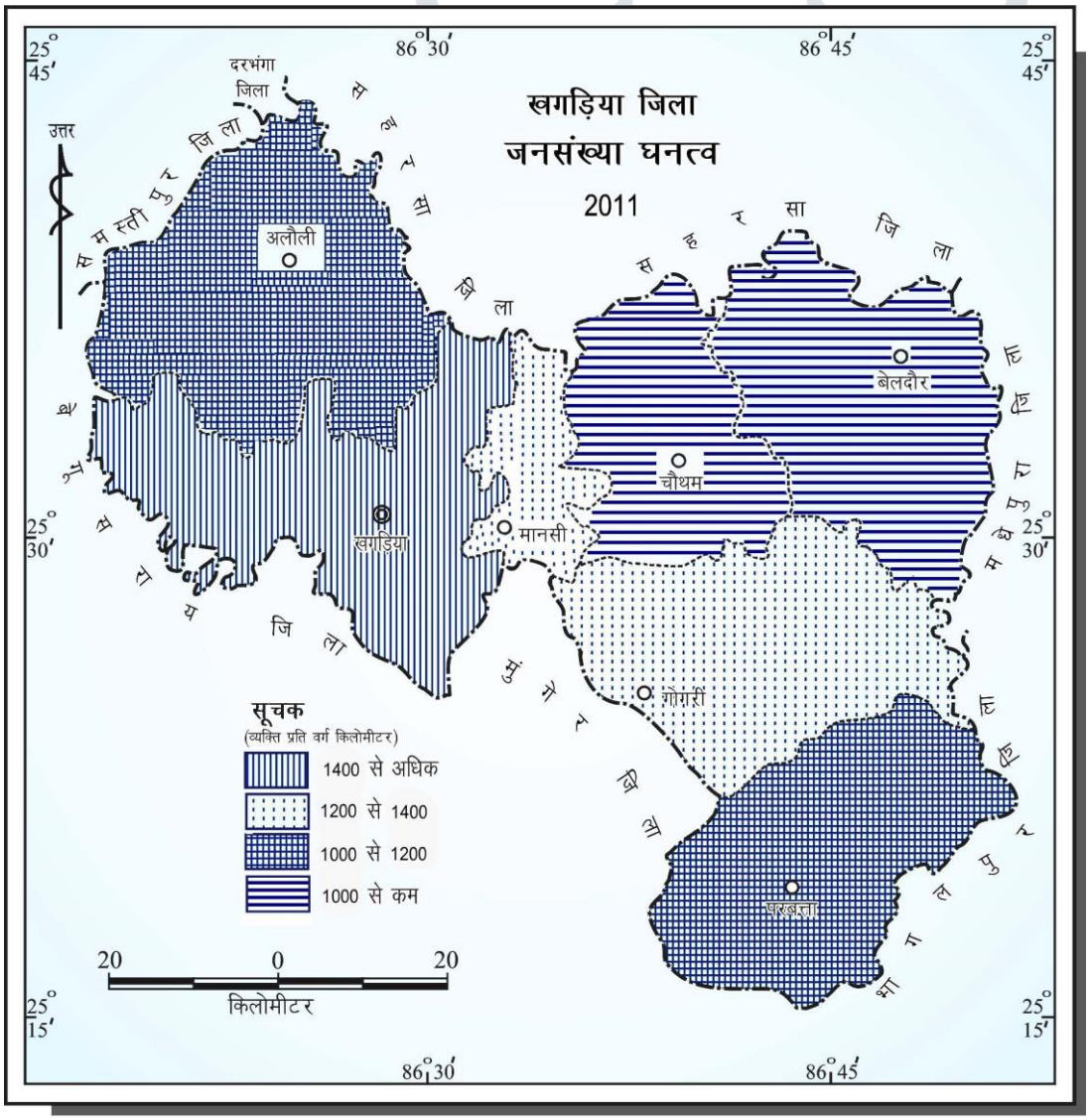

चित्र संख्या - 1.2

तालिका 1.1 तथा चित्र सं0 – 1.2 से स्पष्ट है कि खगड़िया जिला का कुल जनसंख्या 1666886 है। जिसमें सबसे अधिक जनसंख्या (381358) खगड़िया प्रखण्ड का है तथा सबसे कम जनसंख्या (88511) मानसी प्रखण्ड का है। खगड़िया जिला का कुल क्षेत्रफल 1494.97 वर्ग कि0मी0 है। जिसमें सबसे अधिक क्षेत्रफल (274.44) वर्ग कि0मी0 अलौली प्रखण्ड का है तथा सबसे कम क्षेत्रफल (68.03) वर्ग कि0मी0 मानसी प्रखण्ड का है। खगड़िया जिला का कुल घनत्व 1115 है। जिसमें सबसे अधिक घनत्व (1454) खगड़िया प्रखण्ड का है तथा सबसे कम घनत्व (896) बेलदौर प्रखण्ड का है।

खगड़िया जिला के कुछ प्रखंड ऐसे हैं, जो जनसंख्या की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है और कुछ प्रखंड ऐसे हैं, जो क्षेत्रफल की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। कुछ प्रखंड ऐसे हैं जो जनसंख्या और क्षेत्रफल दोनों ही दृष्टि से समान है। क्षेत्रफल की तुलना में जनसंख्या अधिक महत्वपूर्ण प्रखंड है, जो जनसंख्या की दृष्टि से जिला में क्रमशः पहला, दूसरा तथा तीसरा स्थान पर है। ये सभी अधिक सघन आबादी वाले प्रखंड है। जहाँ क्षेत्रफल की तुलना में जिला की अधिक जनसंख्या रहती है। इसके विपरीत कुछ प्रखंड ऐसे हैं, जहाँ क्षेत्रफल की तुलना में कम जनसंख्या है। इसमें बेलदौर, चौथम और परबत्ता हैं, जो क्षेत्रफल के दृष्टि से यह क्रमशः चौथा, पाँचवा स्थान पर है। ये सभी प्रखंड विरल आबादी की है, क्योंकि इन सभी क्षेत्रों में सुविधाओं की कमी है तथा दियारा क्षेत्र एवं बाढ़ प्रभावित क्षेत्र हैं। तीसरी कोटि में ऐसे प्रखंड आते हैं, जहाँ जनसंख्या का संकेन्द्रण मध्यम हुआ है, क्योंकि ये आबादी और क्षेत्रफल दोनों दृष्टि से समान है। इनमें केवल मानसी प्रखंड आते है, जो जनसंख्या एवं क्षेत्रफल दोनों दृष्टि से समान स्तर पर अंतिम (सांतवा) पर स्थित है। जनसंख्या वितरण का आशय कुछ क्षेत्रफल में रहने वाले लोगों की संख्या से है।

जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या के घनत्व से तात्पर्य एक इकाई क्षेत्रफल में रहनेवाले लोगों की संख्या से है। दूसरे शब्दों में जनसंख्या घनत्व मानव भूमि का एक अनुपात है। अतः किसी प्रदेश के क्षेत्रफल तथा जनसंख्या में जो पारस्पारिक अनुपात होता है, उसे घनत्व कहा जाता है।[6]

किसी प्रदेश का जनसंख्या घनत्व इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि उस प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों में उपयोग का स्तर कैसा है। इस उपभोग स्तर से उस देश के व्यक्तियों के आर्थिक विकास का स्तर (प्रति व्यक्ति आय तथा जीवन स्तर) निर्धारित होता है।

2011 की जनगणना के अनुसार खगड़िया जिला में औसत रूप से एक वर्ग कि.मी. क्षेत्र में 1115 व्यक्ति निवास करते हैं। अतः खगड़िया जिला की जनसंख्या का घनत्व 1115 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से बिहार में खगड़िया जिला का 19वाँ स्थान है। 2011 की जनगणना के अनुसार खगड़िया जिला की जनसंख्या का औसत घनत्व 862 व्यक्ति वर्ग कि.मी. है। इस प्रकार पिछले एक दशक में 253 अंको की वृद्धि अंकित की गयी है।

खगड़िया जिला के विभिन्न भागों में धरातल के स्वरूप, मिट्टी की उर्वरता, सिंचाई तथा आवागमन के साधन के विकास में पर्याप्त अन्तर हैं। इस कारण जिला के विभिन्न भगों में जनसंख्या का घनत्व अत्यन्त असमान है। एक ओर जहाँ खगड़िया प्रखंड का घनत्व सर्वाधिक 1454 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0 मी0 है, वहीं बेलदौर प्रखंड में यह सबसे कम 896 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि. मी. है। खगड़िया जिला का औसत जनसंख्या घनत्व 1115 व्यक्ति प्रति वर्ग कि. मी. है। जिला के घनत्व से 3 प्रखंडों में खगड़िया (1454), मानसी (1301) और गोगरी (1266) का जनसंख्या घनत्व अधिक है। इस प्रकार जिले के 43 प्रतिशत प्रखंड का जनसंख्या घनत्व जिला के जनसंख्या घनत्व से अधिक है। जिले के प्रखंड अलौली (1028) और दक्षिण–पूर्व में परबत्ता (1013) भी सघन आबादी वाले प्रखंड हैं। दूसरी और चौथम (927) और बेलदौर (896) जनसंख्या घनत्व व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है।

जनसंख्या के घनत्व के आधार पर खगड़िया जिला को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

उच्चतर घनत्व वाला क्षेत्र

इन क्षेत्रों में वे प्रखंड शामिल हैं, जिनकी जनसंख्या का घनत्व 1250 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से अधिक है। इसके अन्तर्गत खगड़िया (1454), मानसी (1301) और गोगरी (1266) आते हैं। इन क्षेत्रों में जनसंख्या उच्चतर होने के कई कारण हैं।

(क) समतल भूमि, ह्यूमस की मात्रा अधिक होने के कारण उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का होना।

(ख) सड़क एवं रेल परिवहन साधनों से सुसज्जित होना।

(ग) जिला मुख्यालय के निकट होना।

(घ) समतल मैदानी भाग के कारण यातायात (रेलमार्ग व सड़क मार्ग) का जाल बिछा होना।

(ङ) खाद्यान्नों का भारी मात्रा में उत्पादन होना।

(च) उच्च शिक्षा, एवं तकनीकी शिक्षा का होना।

(छ) परिवहन तथा व्यापार की पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध होना।

मध्यम जन घनत्व के क्षेत्र

इन क्षेत्रों में वे प्रखंड शामिल हैं जिनकी जनसंख्या का घनत्व जिला के औसत घनत्व से कम अर्थात् 1000 से1250 के मध्य है। इसमें अलौली 1028 और परबत्ता (1013) है। परिवहन सुविधा होने के कारण व्यापार सुविधा उपलब्ध हैं। परबत्ता का दियारा क्षेत्र गंगा नदी के कारण बाढ़ग्रस्त क्षेत्र है तथा अलौली प्रखंड का क्षेत्र भी कोसी नदी के बाढ़ ग्रसित क्षेत्र हैं जिसके कारण घनत्व मध्यम है। कुछ क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

निम्न जन घनत्व के क्षेत्र

इन क्षेत्रों में वे प्रखंड शामिल हैं, जिनकी जनसंख्या का घनत्व 950 व्यकित प्रति वर्ग कि. मी. से कम वाले है। इसके अन्तर्गत चौथम (927) और बेलदौर (896) प्रखंड आते हैं। इन क्षेत्रों का घनत्व निम्न होने के कई कारण हैं।

(क) जीविकोपार्जन हेतु मानव समूहों का खास कर पुरूषों का बाहर रहना।

(ख) कृषि के लिए उपयुक्त मिट्टी का न होकर मिट्टी बलुई होना।

(ग) यातायात के साधनों का व्यवस्थित विकास न होना।

(घ) गरीबों एंव अमीरों के बीच बढ़ती कदुता।

(ङ) कृषि योग्य भूमि में प्रतिवर्ष बाढ़ आना।

(च) खाद्यान्न फसलों की तुलना में मोटे अनाज का उत्पादन होना।

(छ) शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की भारी कमी।

(ज) आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होना।

(झ) कोसी नदी इसी दोनों प्रखंडों से होकर जाती है। फलतः बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र होने के कारण एक फसली कृषि का होना।

क्षेत्रीय जिला का औसत जनघनत्व 1115 व्यक्ति प्रति वर्ग कि. मी. है। जहाँ ग्रामीण की औसत जनघनत्व 1072 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0 मी0 है वहीं नगरीय जनघनत्व बहुत अधिक 6995 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। नगरीय क्षेत्र की सघनता के कई कारण हैं।

(क) उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा का होना।

(ख) परिवहन की सभी सुविधायें एवं साधनों का उपलब्ध होना।

(ग) व्यापार का केन्द्र होना।

(घ) जिला मुख्यालय, कोर्ट–कचहरी, बड़ा बाजार इत्यादि का होना।

संदर्भ :

1. राव डॉ. वी. पी. सिंह डॉ. आर. वी. पी. सिंह (1993) : बिहार का भौगोलिक स्वरूप, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पृ0 204
2. अताउल्लाह मोहम्मद, (2003) बिहार का आधुनिक भूगोल (2003), ब्रिलिएल्ट प्रकाशन, पटना, पृ0 175
3. गर्ग डॉ. एच. एस., (1995) : जनसंख्या भूगोल, प्रगति प्रकाशन, मेरठ, पृ0 – 14
4. मौर्य डॉ. एस. डी. (2011) जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0– 196
5. ओझा रघुनाथ, (2011) जनसंख्या भूगोल, प्रतिभा प्रकाशन, आचार्य नगर, कानपुर–3 पृ0–201
6. हीरालाल, (1993) जनसंख्या भूगोल, वसुंधर प्रकाश्न, दाऊपुर, गोरखपुर, पृ0–168.